Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **"_चोल राज्य का कला, वास्तु-कला"**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

चोल राज्य , कला और वास्तु-कला

चोल वास्तुकला

चोल साम्राज्य में वास्तुकला फलीफूली तथा इसका अंत 850 A D के बाद हुआ | सबसे बड़ी इमारतें मंदिरों के रूप में इस युग के दौरान बनीं |

चोल वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं :-

तंजौर / तंजावुर का शिव मंदिर, सभी भारतीय मंदिरों में सबसे बड़ा व लंबा मंदिर चोल युग में बना |

चोल मंदिरों में मंडप के प्रवेश द्वारों पर द्वारपाल या रक्षकों की आकृतियाँ बनी होती थीं |

मंदिरों में पूरी तरह से द्रविड़ शैली विकसित थी |

मंदिरों में बनाए गए गणों के आकृतियाँ सबसे यादगार होती थीं |

विजयालया चोलीस्वरा मंदिर के दौरान बनाए गए कुछ प्रसिद्ध

मंदिर निम्न हैं :-

विजयालया चोल के शासन के दौरान नरथमलाई मे विजयालया चोलीस्वरा मंदिर पूरी तरह भगवान शिव को समर्पित है |

कावेरी नदी के किनारे पर कोरंगनाथ मंदिर,श्रीनिवासनल्लुर परांतका चोल – 1 के द्वारा बनाया गया | यह श्रीनिवासनल्लुर में स्थित है | चोल वास्तुकला के अनूठे व आवर्ती काल्पनिक पशु यजही को मंदिर के स्तंभों पर उकेरा जाता था | बृहदीस्वरर मंदिर या पेरुवुदाइयर कोविल या राजराजेश्वरम मंदिर पूरी तरह चट्टानों से बने हैं | राजराज चोल-1 के द्वारा बनाया गया यह विश्व का पहला मंदिर है साथ ही साथ यह यूनेस्को की विश्व धरोहर है | यह तंजावुर में स्थित है |

गंगाईकोण्डाचोलापुरम राजाराज के बेटे राजेंद्र 1 के द्वारा बनाया गया | गंगाईकोण्डाचोलापुरम चौलक्य, गंगा , पाल तथा कलिंग पर राजेंद्र 1 के विजय प्राप्त करने पर एक नई राजधानी बनी |

References: Internet & Competitive books.